गौ आधारित प्राकृतिक खेती

कृषि कुंभ (दिसंबर, 2022),
खण्ड 02 भाग 07, पृष्ठ संख्या 28–30

गौ आधारित प्राकृतिक खेती

राम लला पटेल[1] एवं अतुल कुमार यादव[2]

[1]एम0एस0सी0 (कृषि) अनुवांशिकी व पादप प्रजनन, बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी, उत्तर प्रदेश

[2]एम0एस0सी0 (कृषि) कृषि प्रसार, वरिष्ठ प्रशिक्षण समन्वयक, ए0सी0ए0बी0सी प्रशिक्षण केन्द्र, (राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान, भारत सरकार) उत्तर प्रदेश, भारत।

आज के वर्तमान समय में "जहरमुक्त व पोषणयुक्त" खाद्यान्न मिलना बहुत ही मुश्किल होता जा रहा है व किसान द्वारा जानकारी के अभाव में अधिक रसायनों का उपयोग करने से धीरे धीरे खेती अधिक खर्चिली व किसानों को कम उत्पादन से घाटे का सामना करना पड़ रहा है देखा जाए तो किसानों को कृषि घाटे की नजर से देखा जा रहा है वहीं पर्यावरण को दूषित करने के अतिरिक्त रासायनिक खेती ने फसल उत्पादन की लागत को इतना बढा दिया है कि किसान या तो बोझ में दब रहा है या कृषि छोड़ दूसरे कामों के तलाश में शहरों की ओर रूख कर रहा है।

कृषि क्षेत्र में देश और प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्राकृतिक खेती सबसे बेहतर विकल्प है इस पद्धति को अपनाकर किसानों के उत्पादन की लागत कम हो कर आय कई गुना बढ सकती है प्राकृतिक खेती के इस कड़ी में गाय के गोबर व मूत्र से कृषि से संम्बधित विभिन्न सामग्री जैसे – जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत इत्यादि तैयार कर व खेती में इनका उपयोग कर खेती के लागत को कम किया जा सकता है तथा कुछ शस्य क्रियाओं जैसे आच्छादन, वाफसा इत्यादि को अपनाकर खेती में कम लागत के साथ अधिक उत्पादन लिया जा सकता है।

आज के आधुनिक व यंत्रीकरण के युग में वैज्ञानिक खेती से खेत में मंहगें बीज, खाद, कीटनाशक तथा बड़े – बड़े यंत्रों का प्रयोग हुआ है इससे उपज व पैदावार में वृद्धि तो हुआ है लेकिन देखा जाय तो खेती करना बहुत ही मंहगा होता जा रहा है वही दूसरी ओर अधिक रसायनों के उपयोग से धीरे – धीरे मृदा की उर्वरा शक्ति कम होती जा रही है।

गौ आधारित प्राकृतिक खेती के प्रमुख घटकः

1. **जीवामृत** – यह परम्परागत खेती से भिन्न है क्योंकि इसमें गाय का गोबर और मूत्र, जैविक खाद के रूप में नहीं बल्कि एक जैव–जामन के रूप में प्रयोग किया जाता है (जिस प्रकार दूध में दही की थोड़ी सी

मात्रा डालकर जीवाणुओं की क्रियाशीलता को बढा कर दही तैयार किया जाता) यह जामन, भूमि में लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं एवं स्थानीय केंचुओं की संख्या एवं गतिविधियों को सर्वश्रेष्ठ स्तर तक बढाकर मृदा में पहले से अनुपलब्ध पौष्टिक तत्वों की पौधों को उपलब्धता सरल करता है इससे पौधों की हानिकारक जीवाणुओं से सुरक्षा तथा भूमि में जैविक कार्बन की मात्रा में बढ़ोतरी होती है।

जीवामृत बनाने हेतू आवश्यक सामग्री –

- 10 कि0ग्रा0 देशी गाय का गोबर,
- 8 से 10 लीटर देशी गाय का मूत्र,
- 1.5 से 2 कि0ग्रा0 गुड़,
- 1.5 से 2 कि0ग्रा0 बेसन,
- 180 लीटर पानी,
- एक मुट्ठी पेड़ के नीचे की मिट्टी।

तैयार करने की विधी व प्रयोग –

सर्वप्रथम गुड़, बेसन व गोबर को पानी या गौ मूत्र के साथ अच्छे से मिलाकर तरल के रूप में तैयार कर लें। अब इन सामग्रीयों को एक ड्रम में डालकर लकड़ी की सहायता से अच्छे से घोलें। ठीक से घोलने के बाद जीवामृत बनने के लिए दो से तीन दिन तक छाये में रख दें। व जूट के बोरी से ढक दें। प्रतिदिन सुबह व शाम घड़ी के सुई की दिशा में लकड़ी के डंडे से इसे दो मिनट तक घोलें। दो से तीन दिन बाद जीवामृत बनकर तैयार हो जाता है जीवामृत को भूमि में सिचाई के साथ खेत में डालने पर जिवाणुओं की संख्या में वृद्धि होती है। व भूमि के रासायनिक व जैविक गुणों में सुधार होता है। जीवामृत को 200 लीटर प्रतिएकड़ के हिसाब से उपलब्धता के अनुसार एक या दो बार सिचाई के पानी के साथ उपयोग में लाया जाय व बागवानी में दोपहर के समय पेड़ की छाया में प्रति पेड़ 2 से 5 लीटर महीने में एक या दो बार गोलाकार डालने से उत्पादन भी अच्छी होती है व फसलों की पैदावार भी अच्छी होती है

2. **घनजीवामृत** – घनजीवामृत, जीवामृत का ही सूखा हुआ स्वरूप है जिसे फसल बोने से पहले खेत में मिलाया जाता है।

तैयार करने की विधी व प्रयोग –

सर्वप्रथम 200 कि0ग्रा0 देशी गाय के गोबर को धूप में सूखा लें। उसके बाद 20 लीटर ताजा बना हुआ जीवामृत गोबर में मिलाकर 2 दिन तक छाया में रखते हैं सूखने के बाद इसे डंडे से पीसकर महिन बना लिया जाता है यही घनजीवामृत है जिसे 1 एकड़ के लिए उपयोग में लाया जा सकता है

3. **बीजामृत** – प्राकृतिक खेती का एक आवश्यक आदान बीजामृत भी है बीजामृत बीजों को बीज जनित रोगों से बचाता है तथा बीजों के अंकुरण क्षमता को भी अद्भूत रूप से बढाता है।

तैयार करने की विधी व प्रयोग –

देशी गाय का 5 कि0ग्रा0 गोबर, 5 लीटर गौ मूत्र, 50 ग्राम बूझा हुआ चूना और थोड़ी सी मिट्टी (आधी मुट्ठी) को

20 लीटर पानी में मिलाकर बीजामृत तैयार किया जाता है एक रात इसे रखने के बाद इसमें 100 कि0ग्रा0 बीज का संस्कार (बीज उपचार) किया जा सकता है इसके एक दिन बाद संस्कारित बीज बुवाई के लिए तैयार माना जाता है।

4. **आच्छादन** – भूमी में उपलब्ध नमी को सुरक्षित रखने हेतू इसकी उपरी सतह को किसी अन्य फसल या फसलों के अवशेष से ढ़क दिया जाता है ऐसा करने से भूमी में नमी बरकरार रहती है तथा वातावरण से नमी को खींच कर खेती हेतू पानी की खपत को कम करता है जीवाणुओं और केचूओं की गतिविधियों को बढाता है तथा खरपतवार को नियंत्रित करता है व अंत में विघटित हो कर भूमी से कार्बन उत्सर्जन को रोककर भूमी के जैविक कार्बन क्षमता को बढाता है।

5. **वाफसा** – प्राकृतिक कृषि में वाफसा (भूमि में वायु प्रवाह) निर्माण भी एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें भूमि में हवा व नमी का बराबर संतुलन बनाया रखा जाता है यह वाफसा, भूमि में जीवामृत प्रयोग तथा आच्छादन का परिणाम है जिवामृत के प्रयोग तथा आच्छादन करने से भूमि की संरचना में सुधार होकर तीव्र गति से ह्यूमस निर्माण होता है इससे भूमि में अच्छे जल प्रबंधन की प्रक्रिया आरम्भ होती है फसल न तो अधिक वर्षा तूफान में गिरती है और न सूखे की स्थिती में डगमगाती है।

6. **अग्नियस्त्र** – फसलों पर कीट पंतगों के रोकथाम के लिए स्थानिय वनस्पती पर आधारित सस्ता तथा किसान के खेत में ही बनने वाला आदान है अग्नियस्त्र।

   तैयार करने की विधी व प्रयोग – 5 कि0ग्रा0 नीम के पौधे के पत्ते, 20 लीटर देशी गाय का मूत्र, 500 ग्राम तम्बाकू पाउडर, 500 ग्राम हरी मिर्च व 50 ग्राम लहसुन का पेस्ट, को मिलाकर धीमें आँछ पर उबालकर 48 घण्टे के लिए रखा जाता है सुबह–शाम दो–दो मिनट के लिए घोलें, इस घोल को 6 लीटर प्रति 200 ली पानी में मिलाकर एक एकड़ खेत में छिड़काव कर सकते हैं व खेत में लगने वाले कीट पंतगों का रोकथाम कर सकते हैं।

गौ आधारित प्राकृतिक खेती सभी कृषि समस्याओं हेतू सफल निदान है इस विधि द्वारा जहरमुक्त एंव अधिकतम फसल – फल उत्पादन हेतू बहुत ही आसान व बहुत कम खर्च में बनने वाले कुछ घटक द्वारा इन सभी समस्याओं से उभरा जा सकता है व कृषि को पुनः आसान व रासायन मुक्त किया जा सकता है।

प्राकृतिक खेती विधि, मित्र कीट–पतंगों की संख्या में वृद्धि एवं अनुकुल वातावरण का निर्माण कर फसलों को कीट–पंतगों एवं बीमारियों से सुरक्षित करती है इस तरह किसी भी कीटनाशक या फफूंदनाशक की आवश्यकता को भी समाप्त कर देती है।